''और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करेगा वह बड़ी सफलता प्राप्त करेगा।''

समाज सुधार प्रकाशण श्रंखला 1

इस्लाम और शराब नोशी

मौलाना अरशद मदनी

अध्यक्ष, जमीअत उलमा-ए-हिन्द

प्रकाशक

जमीअत उलमा-ए-हिन्द

1-बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-2

इस्लमा और शराब नोशी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ أَجْمَعِيْنَ.

कुरआन कहता है:

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ○ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطَانُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ○﴾ (المائدة: 91-90)

''ऐ ईमान वालो! शराब, जुआ, मूर्ति पूजा, पांसे फेंकना सब शैतान के गंदे काम हैं, इसलिये इनसे बचते रहो ताकि तुम मुक्ति पाओ। शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुआ द्वारा तुम में दुश्मनी और बैर डाले और तुमको अल्लाह की याद और नमाज़ से रोके, तो क्या छोड़ोगे?''

इस से पहले भी शराब के हराम होने के बारे में आयतें उतर चुकी थीं, ओदश आचुका था लेकिन स्पष्ट रूप से शराब को छोड़ देने का आदेश नहीं दिया गया था इसलिये हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु ने कहा कि ऐ अल्लाह! शराब के बारे में स्पष्ट आदेश दीजिये। इसलिये जब यह आयत उतरी जिसमें स्पष्ट रूप से मूर्ति पूजा की तरह इस गंदी चीज़ को छोड़ने का आदेश था तो हज़रत

उमर रज़ियल्लाहु अनहु संतुष्ट हो गए और चिल्ला उठे कि ऐ अल्लाह! हमने शराब को छोड़ दिया, लोगों ने शराब के मटके तोड़ डाले, मधुशालाएं बर्बाद कर दी गईं। मदीने के गली-कूचों में शराब पानी की तरह बह रही थी, अरब के सभी लोग इस गंदी शराब को छोड़कर ख़ुदा के बोध और नबी के प्रेम की पवित्र शराब में मस्त हो गए, सभी गंदगियों की जड़ शराब के मुक़ाबले में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस संघर्ष ने ऐसा काम किया जिसका उदारहण इतिहास में नहीं मिलता। शराब पी कर जब बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो कभी कभी शराबी पागल हो कर आपस में लड़ पड़ते हैं यहां तक कि नशा उतरने के बाद भी कभी कभी लड़ाई का प्रभाव बाक़ी रहता है और दुश्मनी बनी रह जाती है।

इसी लिये जनाबे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"اِجْتَنِبُوْا الْخَمْرَ فَاِنَّهَا مِفْتَاحُ كُلِّ شَرٍّ."

''शराब से बचो, बेशक शराब हर पाप के दरवाज़े को खोलने वाली है।''

क़ुरआन की इस आयत और हदीस से मालूम होता है कि शराब पीने वाला अल्लाह और उसके रसूल का अवज्ञाकारी और यातना का योग्य है। क़ुरआन ने अल्लाह और उसके रसूल के अवज्ञाकारी के बारे में फ़रमाया है:-

﴿وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ﴾ (النساء:14)

''जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा नहीं मानेगा और इस्लाम की निर्धारित की हुई सीमाओं से बढ़ जाएगा अल्लाह

उसको आग में डाल देगा, सदैव उसमें रहेगा और उसके लिये उपमानजनक यातना है।''

लेकिन दुख की बात है कि हमारे समाज में शराब का अभिशाप अवर्णनीय सीमा तक बढ़ गया है, हालांकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो दुनिया में शराब पीता है क़यामत के दिन उसको अल्लाह 'तीनतुल ख़बाल' पिलाएगा। सहाबा ने पूछा 'तीनतुल ख़बाल' क्या है? आपने फ़रमाया कि नरक वासियों के ज़ख़्मों से बहने वाली पीप। अर्थ यह है कि नरक की आग में शराबी को जब प्यास लगेगी तो पानी की जगह उसको नरक में जलने वालों के शरीर से जो पीप निकलेगी वह पिलाई जाएगी, शराबी को अपने बुरे परिणाम से बचने के लिये तौबा करनी चाहिये, क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि:

"لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مُدْمِنُ خَمْرٍ."

''अर्थात शराब की लत वाला स्वर्ग में नहीं जाएगा।''

शराब ऐसी बुरी चीज़ है कि अल्लाह का अभिशाप केवल शराबी पर ही नहीं है बल्कि जो थोड़ा भी शराब के लिये माध्यम बनता है उस पर भी अल्लाह का अभिशाप बताया गया है, इसलिये हदीस में आया है:

"لَعَنَ اللّٰهُ الْخَمْرَ وَشَارِبَهَا وَسَاقِيَهَا وَمُبْتَاعَهَا وَبَائِعَهَا وَعَاصِرَهَا وَمُعْتَصِرَهَا وَحَامِلَهَا وَالْمَحْمُوْلَةَ إِلَيْهِ وَآكِلَ ثَمَنِهَا."

''अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया कि अल्लाह का अभिशाप शराब पर है और शराबी पर भी और शराब पिलाने वाले पर भी और ख़रीदने वाले पर भी और बेचने वाले पर भी, बनाने वाले पर भी

और बनवाने वाले पर भी, उठा कर ले जाने वाले पर भी और जिसके पास उठा कर ले जाई जा रही है उस पर भी और शराब का पैसा खाने वाले पर भी।''

इस हदीस का अर्थ यह है कि इस पाप में जो व्यक्ति भी भागीदार है वह शराब और शराबी ही की तरह अल्लाह के अभिशाप का योग्य है और अल्लाह की दया से वंचित है, उसी लिये हज़रत अबदुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियअल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि शराब पीने वाले बीमार हों तो उनका हाल-चाल पूछने के लिये मत जाओ। इमाम बुख़ारी हज़रत इब्ने उम्र रज़ियल्लाहु अनहु का कथन बयान फ़रमाते हैं कि शराब पीने वालों को सलाम भी मत करो, हाल-चाल पूछने और सलाम करने से रोकने का कारण उलमा के नज़दीक शराबी का पापी और अभिशापी होना है जैसा कि पहले गुज़रा है। कुछ हदीसों में यह भी आया है कि शराबियों के साथ न उठो न बैठो और बीमार पड़ जाएं तो हाल-चाल भी मत पूछो, वह मर जाएं तो उनके जनाज़े में शरीक न हो। शराब पीने वाला क़यामत के दिन अल्लाह के सामने इस तरह आएगा कि उसका चेहरा काला होगा और उसकी ज़बान सीने तक लटकी हुई होगी और उसकी राल टपक रही होगी। हर देखने वाला उससे घृणा करेगा औरा देखकर पहचान जाएगा कि यह दुनिया में शराबी था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि शराब पीना बहुत बड़ा पाप है। तबरानी ने सही प्रमाण के साथ एक घटना बयान की है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाह अनहु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहुमा और कुछ लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के बाद बैठे थे, वहां बात होने लगी कि बड़े से बड़ा पाप क्या है। जब कोई अंतिम राय नहीं बन सकी तो

मुझे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियल्लाहु अनहुमा के पास भेजा तो इन्होंने फ़रमाया कि सबसे बड़ा पाप (मोमिन का) शराब पीना है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाह अनहु फ़रमाते हैं कि मैंने उनके पास आकर बताया तो उन लोगों ने अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियल्लाहु अनहुमा की इस बात को न माना और उठकर ख़ुद उनके पास गए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ियअल्लाह अनहु ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि बनी इस्राईल के एक बादशाह ने एक व्यक्ति से कहा कि अगर जीवित रहना चाहता है तो शराब पी या किसी की हत्या कर या किसी औरत से दुष्कर्म कर या सूअर का मांस खा, नहीं तो तेरी हत्या कर दी जाएगी। उसने सबसे छोटा पाप समझ कर शराब पी ली, तो जब शराब पी कर बुद्धि ही भ्रष्ट हो गई तो फिर बादशाह के कहने के अनुसार सारे ही पाप करता चला गया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि एक बार शराब पीने के बाद चालीस दिन तक नमाज़ क़बूल नहीं होगी और शराबी के मूत्राशय में अगर शराब की एक बूंद भी मृत्यु के समय होगी तो स्वर्ग उस पर हराम है।

विशेष रूप से धार्मिक विद्वानों और हर जगह के ज़िम्मेदार लोगों का यह कर्तव्य है कि सत्य के मार्ग से भटके हुए शराब की लत में पड़े हुए लोगों के हाथ को पकड़ें, उनको आख़िरत की यातना से डराएं और तौबा कराएं, क्योंकि अभी तौबा और क्षमा का दरवाज़ा खुला हुआ है। अल्लाह-तआला फ़रमाता है:

﴿يَا ابْنَ آدَمَ لَوْ بَلَغَتْ ذُنُوبُكَ عَنَانَ السَّمَاءِ ثُمَّ اسْتَغْفَرْتَنِي غَفَرْتُ لَكَ وَلَا أُبَالِي﴾

"ऐ मानव! अगर तेरे पाप आसमान की ऊंचाई तक पहुंच गए

अर्थात पापों का पहाड़ बन गया, फिर भी अगर तू मुझसे माफ़ी मांगेगा तो मैं माफ़ कर दूंगा।''

लेकिन तौबा केवल ज़बान से तौबा का शब्द कह लेने का नाम नहीं है, बल्कि तौबा नाम है अपने जीवन को उस पाप से पाक कर लेने का जिससे तौबा कर रहा है और अल्लाह से सच्चा और पक्का वादा करने का कि अब यह पाप कभी नहीं करूंगा।

दीन से दूरी के कारण हमारे युवाओं में विशेष रूप से शराब की लत बढ़ती जा रही है इसलिये इस लेख को याद करके आम मजमे में भी बयान किया जाये क्योंकि जुमा के दिन मस्जिद में तो आम तौर पर बुरी आदतों से दूर रहने वाले लोग ही आते हैं इस लिये आम लोगों तक अधिक से अधिक इस लेख को पहुंचाने के लिये ऐसी सभाओं का आयोजन करना चाहिये जिनमें हर प्रकार के लोग शरीक रहें।

❖●❖

आदरणीय इमाम साहिबान, मदरसों के ज़िम्मेदारान
और जमीअत उलमा-ए-हिन्द के सदस्य

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि वबरकातुह

आशा है कि आप आप अच्छे होंगे।

हमारे बड़ों ने हर ज़माने में मुसलमानों को धर्मिक जीवन जीने का सदुपदेश दिया है, विशेष रूप से स्वतंत्रता के बाद अक़ीदे के सुधार और शरीयत के अनुसार ज़िंदगी बसर करने के लिये पूरे देश में जगह जगह इस्लामी मदरसे की स्थापना को उन्हों ने अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया जिसके नतीजे में आज हमारी मस्जिदें आबाद हैं और हम इस्लामी पहचान के साथ ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं लेकिन इन तमाम प्रयासों के बावजूद मुस्लिम समाज में दिन प्रति दिन प्रतिबंधित चीज़ों का रिवाज बढ़ रहा है और लगता है कि मुसलमान आख़िरत से लापरवाह हो कर पापों को अपने जीवन में उतार रहा है। दूसरे शब्दों में अल्लाह की यातना को निमंत्रण दे रहा है क्योंकि क़ुरआन में बहुत स्पष्ट रूप से फ़रमाया है "हमने हर एक को उसके गुनाह पर पकड़ा है।" इस का अर्थ है कि गुनाह ख़ुदा की यातना का रास्ता खोलता है।

भारत की वर्तमान स्थिति में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि इसका ख़तरा है कि कहीं मुसलमान की आख़िरत से लापरवाही, गुनाहों की आदत और समाज की बर्बादी उन लोगों के प्रेरणा में ख़ुदा न करे कुछ जान न डाल दे जो भारतीय मुसलमानों को मुर्तद (विधर्मी) बनाने के लिये घर वापसी का नाम दे रहे हैं

इसलिये अपने बड़ों के मार्गदर्शन को सामने रखते हुए समाज में फैली हुई बीमारियों के बारे में अल्लाह व रसूल के आदेशों और क़ुरआन व हदीस की रौशनी में छोटे छोटे किताबचे तैयार कर के अपने सदस्यों, इमामों और मदरसों के ज़िम्मेदार लोगों के पास भेज रहे हैं ताकि वह उनको अपने भाषणों का विषय बनाकर समाज सुधार का कार्य उचित ढंग कर सकें और अगर संभव हो तो अन्य भाषाओं में भी इसका अनुवाद करके आम करने का प्रयास करें। अगर हमारा यह प्रयास एक ओर ख़ुदा की दया से किसी के मार्गदर्शन का माध्यम बन सकता है तो दूसरी ओर अल्लाह ने चाहा तो हमारी मुक्ति का साधन भी होंग।

वस्सलाम

अरशद मदनी